SNEH TEACHERS TRAINING COLLEGE, JAIPUR
"Foster Emotional Intelligence in Youth Through Education" (ICFEIYE-2024)
DATE: 15 April 2024
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं अभिवृत्ति में तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. रीना पाटिल, प्राचार्य, ज्ञानोदय शिक्षा महाविद्यालय, इन्दौर

सारांश

प्रस्तुत शोध में शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं अभिवृत्ति में तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध के लिये मध्यप्रदेश के इन्दौर शहर के 10 निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन स्तरीकृत याट्टच्छिक लाटरी विधि द्वारा किया गया। प्रत्येक विद्यालय से 05–05 महिला एवं पुरूष शिक्षक को सम्मिलित किया किया गया। इस प्रकार कुल 50 महिला एवं 50 पुरूष शिक्षकों का चयन किया गया। प्रदत्तों के संकलन के लिये शोधार्थी द्वारा डॉ. एस. के मंगल द्वारा निर्मित मंगल इमोशनल इन्टेलीजेन्स इन्वेन्ट्री (MEII) का एवं डॉ0 जे0सी0 गोयल द्वारा निर्मित ''शिक्षण–व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति मापनी'' का प्रयोग किया गया। इस शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोध परिणामों से प्राप्त हुआ कि शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि के माध्य फलांको के मान में सार्थक अंतर पाया गया। शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति के माध्य फलांको के मान में सार्थक अंतर पाया गया। शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं अभिवृत्ति के माध्य फलांको के मान में सार्थक अंतर पाया गया।

मुख्य शब्द – शिक्षक, संवेगात्मक बुद्धि एवं अभिवृत्ति

प्रस्तावना

किसी भी देश की उन्नति उसके मानवीय संसाधनों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। मानवीय संसाधनों को गुणवत्तापूर्वक बनाने की जिम्मेदारी वहाँ की शिक्षा व्यवस्था पर होती है। किसी भी शिक्षा व्यवस्था में अध्यापक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अध्यापक को यह जानकारी होनी जरूरी है कि शिक्षा के व्यापक उद्देश्य क्या है? हमारे संविधान में यह स्पष्ट रूप से उल्लेखित है कि शिक्षा को किन मूल्यों व आदर्शो ं के लिए कार्य करना चाहिए। शिक्षक शिक्षा मे ं गुणात्मक सुधार अति आवश्यक है। भविष्य में आने वाली चुनौतियो ं का सामना करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम को और अधिक गतिशील बनाने की आवश्यकता है। बेहतर शिक्षक शिक्षा के लिए शिक्षक प्रशिक्षकों में भी अन्य क्षेत्रों के विशेषज्ञो ं की भांति दक्षता का विकास करना होगा। अपने व्यावसायिक विकास में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका तो स्वयं अध्यापक की होती है तभी वह भावी शिक्षकों में व्यावसायिक दक्षता का विकास कर सकेंगे। शिक्षक को सतत् स्वसमीक्षा के द्वारा आत्म मूल्यांकन करते रहना चाहिए। उसको निरन्तर ज्ञान का अन्वेषण करते रहना चाहिए जिससे वह बालकों को नवीन ज्ञान प्रदान कर सके। शिक्षक को सतर्क रहते हुए सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों को आत्मसात् करते हुए अपनी नीति का निर्माण करना चाहिए इससे वह अपने शिक्षण का सामयिक रूप पायेगा। समग्र व्यावसायिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि इसकी नींव सेवा पूर्व शैक्षिक एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान ही डाल दी जानी चाहिए। क्रियात्मक अनुसंधान से सम्बन्धित संगोष्ठियों, सेमिनार्स, शोधकर्ताओं, अभ्यास शिक्षण, प्रोजेक्ट कार्यों, ऑनलाइन व्यावसायिक स्त्रोतों कक्षागत व व्यक्तिगत आत्ममूल्याकंन द्वारा अधिगम अनुभवों की समीक्षा, साथियों से चर्चा के द्वारा शिक्षण अभिक्षमताओं का विकास किया जा सकता है।

डॉ0 राधा कृष्णन् (1948) ने लिखा है कि ''समाज मे ं अध्यापक का स्थान महत्वपूर्ण है यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक परम्पराएं और तकनीकी कौशल पहु ंचाने का केन्द्र है और सभ्यता के प्रकाश को प्रज्ज्वलित रखने मे ं सहायता देता है।''

शिक्षक बालक के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाकर तथा उन्हें समाज राष्ट्र और विश्व के नागरिकों के रूप में रचनात्मक भूमिका निभाने के लिए तैयार करता है। शिक्षा के सभी उद्देश्य तभी फलीभूत होते हैं जबकि योग्य कर्मठ व निष्ठावान शिक्षक हो ं। वास्तव मे ं शिक्षा का आधार शिक्षक हैं जो पाठ्यक्रम को जीवन्त बनाता है। समाज की परम्पराओं, सभ्यता, संस्कृति की समुचित व्याख्या कर आगे बढ़ता है। वह अगणित दीपकों की लौ को ज्ञान प्रकाश से अलंकृत करके समाज को उजाले का उपहार देता है। इतिहास गवाह है कि व्यक्ति एवं समाज के निर्माण की अपनी दैवीय प्रतिभा के कारण वह आराध्य रहा है तथा उसके आगे वर्तमान व भविष्य की सारी शक्तियाँ नतमस्तक होती हैं।

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

संवेगात्मक बुद्धि

कूपर और सवाफ (1997) इमोशनल इंटेलिजेंस को मानव ऊर्जा, सूचना, कनेक्शन और प्रभाव के स्रोत के रूप में भावनाओं की शक्ति और कौशल को समझने, समझने और प्रभावी ढंग से लागू करने की क्षमता के रूप में परिभाषित करते हैं।

मेयर और सालोवी (1993) संवेगात्मक बुद्धिमत्ता को परिभाषित करते हैं, अपनी और दूसरे की भावनाओं और भावनाओं को उनके बीच भेदभाव करने और किसी की सोच अ संवेग (भावनाएँ) हमारी सोच व क्रियाओं को नियंत्रित करने का शक्तिशाली साधन है तथा किसी मनुष्य की सफलता मे ं इनकी बहुत महत्वूपर्ण भूमिका होती है।

गोलमेन (1998) के अनुसार भावात्मक बुद्धि वह है जो व्यक्ति की स्वयं की एवं दूसरो ं की भावनाओं एवं संबंधों को व्यवस्थित कर सकें। भावात्मक बुद्धि में व्यक्तिगत व सामाजिक दो प्रकार की दक्षता होती है। इन दोनों में 5 बड़े कारक होते हैं। आत्म नियंत्रण, आत्म जागरूकता, प्रेरणा, सहानुभूति, सामाजिक कौशल।

चूंकि एक अध्यापक छात्र के व्यवहार को आकार देता है। अतः देश को भावात्मक रूप से मजबूत व संतुलित अध्यापकों की आवश्यकता है। भावात्मक बुद्धि को बढ़ाकर छात्राध्यापक की स्वतंत्रतापूर्वक सोचने की क्षमता को बढ़ाकर उन्हें जिम्मेदार अध्यापक व सम्पूर्ण नागरिक के रूप मे ं विकसित किया जा सकता है। सांवेगिक बुद्धि संवेगों की अनुभूति करने, प्रयोग करने, पहचानने प्रत्यास्मरण करने, सीखने एवं समझने की आंतरिक शक्ति है। बालकों की संवेगात्मक बुद्धि पर पर्यावरण, सामाजिक एवं पारिवारिक परिस्थितियो ं का प्रभाव दृष्टिगत होता है। मनुष्य अपने वातावरण के प्रति संवेदनशील रहा है। किन्तु साथ ही अपनी आंतरिक मनोदशाओं के प्रति भी चिंतनशील रहा है। इसी कारण से सांवेगिक बुद्धि का आर्विभाव हुआ है। अत्यधिक तनाव, थकान, क्रोध, आवेश, आर्थिक संकट, विपरीत परिस्थितियाँ मनुष्य के मानसिक संतुलन को अस्थिर रखती हैं, जिससे संवेगात्मक बुद्धि का विकास अवरूद्ध हो जाता है आधुनिक मनोरंजन के साधनों ने भी किशोर किशोरियों का संवेगात्मक दोहन करके उन्हें पथभ्रष्ट कर दिया है। ऐसे में अध्यापक को अपना शिक्षण कार्य व उससे जुड़ी समस्याओं का निराकरण व अन्य विद्यालयी समस्याओं का समाधान केवल बुद्धि के प्रयोग से नहीं वरन् बुद्धि व संवेग दोनों के संतुलन से करना होगा।

अभिवृत्ति

अभिवृत्ति व्यक्ति के मनोभावों अथवा विश्वासों को इंगित करती है और ये बताती है कि व्यक्ति क्या महसूस करता है अथवा व्यक्ति के पूर्व विश्वास क्या है? अभिवृत्ति से अभिप्राय व्यक्ति के उस दृष्टिकोण से है, जिसके कारण वह किन्हीं वस्तुओं, व्यक्तियों, परिस्थितियों, योजनाओं आदि के प्रति किसी विशेष प्रकार का व्यवहार करता है। दूसरे शब्दों में अभिवृत्ति व्यक्ति के व्यक्तित्व के वे प्रवृत्तियाँ हैं जो उसे किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा कार्य के सम्रुबन्ध में विशिष्ट प्रकार के व्यवहार को प्रदर्शित करने का निर्णय लेने के लिए प्रेरित करती है।

पूर्व शोध का अध्ययन :–

तिवारी, राधिका (2021) ने विश्वविद्यालय और पूर्व विश्वविद्यालयीन व्याख्याताओं की शैक्षिक दक्षता, व्यक्ति और अभिवृत्ति के बीच सम्बन्ध के अध्ययन किया और पाया कि शिक्षण अभिवृत्ति के निर्माण में वाह्य वातावरण का विशेष योगदान होता है। पाठ्यक्रम में लगातार परिवर्तन, शिक्षण दक्षता को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करता है। कक्षाकक्ष का आकार अभिवृत्ति और शिक्षण दक्षता को प्रभावित करता है।

दास व बोहरा (2022) ने शिक्षको ं की संवेगात्मक बुद्धि के संबंध में शिक्षक प्रभाविकता का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष निकाला कि शिक्षक प्रभाविकता एवं उनकी भावनात्मक बुद्धि के मध्य सार्थक संबंध पाया जाता है। निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले शिक्षको ं की तुलना मे ं उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले शिक्षकों की शिक्षक प्रभाविकता अधिक पायी गई।

भावना (2022) ने देवी पाटन के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की ऊर्जा शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारकों एवं योग्यता व्यक्तित्व विशेषताओं के सम्बन्ध का अध्ययन मे ं पाया कि विभिन्न शैक्षणिक योग्यता वाले शिक्षकों की ऊर्जा शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया।

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

पाण्डेय (2023) ने संवेगात्मक बुद्धि के विकास पर दुश्चिंता के प्रभाव का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि निम्न शैक्षिक दुश्चिंता वाले विद्यार्थी अधिक शैक्षिक दुश्चिंता ग्रस्त विद्यार्थियो ं से संवेगात्मक रूप से अधिक बुद्धिमान है।

अध्ययन का औचित्य

किसी भी राष्ट्र की शिक्षा पद्धति की गुणवत्ता विद्यालयी शिक्षको ं की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। एक आदर्श शिक्षक छात्र के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक विकास को दिशा प्रदान करता है। यह सही है कि विद्यालय भवन, पाठ्यक्रम, पाठ्य सहगामी क्रियाएँ आदि बालक के व्यक्तित्व निर्माण एवं अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं, लेकिन जब तक एक अच्छे अध्यापक द्वारा इनमें गति नहीं प्रदान की जावेगी, तब तक ये सभी निरर्थक हैं। अतः अध्यापक ही वह शक्ति है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आने वाली संततियों पर अपना प्रभाव डालती है। अतः किसी भी राष्ट्र व समाज की प्रगति अध्यापकों की गुणवत्ता व व्यक्तित्व पर निर्भर करती है।

इस अध्ययन के द्वारा शोधार्थी ने यह जानने का प्रयास करेगी कि शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का विद्यार्थियों पर क्या प्रभाव पड़ता है ? शिक्षकों की अभिवृत्ति अपने शिक्षण के प्रति कैसी है ? उनकी संवेगात्मक बुद्धि और अभिवृत्ति से विद्यार्थी किस प्रकार प्रभावित होते है?

समस्या कथन

''शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं अभिवृत्ति में तुलनात्मक अध्ययन करना''

उद्देश्य

अध्ययन के निम्न उद्देश्य थे–

1. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूषं एवं महिलाओं शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूषं एवं महिलाओं शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

अध्ययन की निम्न परिकल्पनाएँ थी–

1. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूषं एवं महिलाओं शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूषं एवं महिलाओं शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
3. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में मध्यप्रदेश के इन्दौर शहर के 10 शासकीय माध्यमिक विद्यालयों का चयन स्तरीकृत याद्दच्छिक लाटरी विधि द्वारा किया गया। प्रत्येक विद्यालय से 05–05 महिला एवं पुरूष शिक्षक को सम्मिलित किया गया। इस प्रकार कुल 50 महिला एवं 50 पुरूष शिक्षकों का चयन न्यादर्श के लिये किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के संकलन के लिये शोधार्थी द्वारा निम्न प्रश्नावली का प्रयोग किया गया, जो निम्न है :–

अ) संवेगात्मक बुद्धि मापनी :– डॉ. एस. के मंगल द्वारा निर्मित मंगल इमोशनल इन्टेलीजेन्स इन्वेन्ट्री (MEII) का प्रयोग किया गया है।

ब) अभिवृत्ति मापनी :– डॉ0 जे0सी0 गोयल द्वारा निर्मित ''शिक्षण–व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति मापनी'' का प्रयोग किया गया।

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

शोध विधि

इस शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तो का संकलन –

शोधार्थी द्वारा प्रदत्तों के संकलन हेतु शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के प्राचार्यो से अनुमति प्राप्त कर महिला एवं पुरूष शिक्षकों से संवेगात्मक बुद्वि एवं अभिवृत्ति से संबंधित प्रामाणिक मापनियों को सोहार्द्रपूर्ण वातावरण में भरवायी गई।

आँकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या

आँकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियाँ का प्रयोग किया गया है।

परिणाम एवं विवेचनाः

उद्देश्य 1 – शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्वि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

तालिका 1 :– शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिलाओं शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि के माध्य फलांकों का सारांश

संवेगात्मक बुद्वि	N	M	SD	't' value	df	Remark
पुरूष शिक्षक	50	4.77	0.70	3.36*	98	Significant
महिला शिक्षिकाये	50	5.24	0.66			

सार्थकता का स्तर .01

तालिका 1 से पता चलता है कि शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूष शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्वि का माध्य 4.77 एवं प्रमाणिक विचलन 0.70 है एवं शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत महिला शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्वि का माध्य 5.24 एवं प्रमाणिक विचलन 0.66 है, तथा t का मान 3.36 है, जो $df = 98$ के सार्थकता के स्तर 0.01 पर तालिका के मान 2.567 से अधिक है। इसलिये यह सार्थकता के स्तर 0.01 पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना **''शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्वि में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।''** निरस्त की जाती है।

शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत महिला शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्वि के माध्य फलांकों का मान 5.24 हैं, जोकि शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूष शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्वि के माध्य फलांको के मान 4.77 से सार्थक रूप से ज्यादा है। अर्थात् निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत महिला शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्वि के माध्य फलांको के मान, शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूष शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्वि के माध्य फलांको के मान की तुलना में अधिक है। इसलिये कहा जा सकता है कि शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्वि के माध्य फलांको के मान में सार्थक अंतर पाया गया।

उद्देश्य 2 – शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षिकाओं के अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

तालिका 2 :– शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति के माध्य फलांकों का सारांश

अभिवृत्ति	N	M	SD	't'value	df	Remark
पुरूष शिक्षक	50	25.30	5.77	3.02*	98	Significant
महिला शिक्षिकायें	50	22.23	4.27			

*सार्थकता का स्तर .01

तालिका 2 से पता चलता है कि शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूष शिक्षकों की अभिवृत्ति का माध्य 25.30 एवं प्रमाणिक विचलन 5.77 है एवं शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

अध्यापनरत महिला शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का माध्य 22.23 एवं प्रमाणिक विचलन 4.2 है, तथा t का मान 3.02 है, जो $df = 98$ के सार्थकता के स्तर 0.01 पर तालिका के मान 2.567 से अधिक है। इसलिये यह सार्थकता के स्तर 0.01 पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना **"शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।"** निरस्त की जाती है।

शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूष शिक्षकों की अभिवृत्ति के माध्य फलांकों का मान 25.30 हैं, जोकि शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत महिला शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति के माध्य फलांको के मान 22.23 से सार्थक रूप से ज्यादा है। अर्थात् निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूष शिक्षकों की अभिवृत्ति के माध्य फलांको के मान, शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत महिला शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति के माध्य फलांको के मान की तुलना में अधिक है। इसलिये कहा जा सकता है कि शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति के माध्य फलांको के मान में सार्थक अंतर पाया गया।

उद्देश्य 3 – शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

तालिका 3 :– शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं अभिवृत्ति के माध्य फलांकों का सारांश

*सार्थकता का स्तर .05

शिक्षक	N	M	SD	't'value	df	Remark
संवेगात्मक बुद्धि	100	47.37	7.67	2.10*	198	Significant
अभिवृत्ति	100	49.46	6.34			

तालिका 3 से पता चलता है कि शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का माध्य 47.37 एवं प्रमाणिक विचलन 7.67 है एवं शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों के अभिवृत्ति का माध्य 49.46 एवं प्रमाणिक विचलन 6.34 है, तथा t का मान 2.10 है, जो $df = 198$ के सार्थकता के स्तर 0.01 पर तालिका के मान 2.567 से कम लेकिन सार्थकता के स्तर 0.05 पर तालिका के मान 1.96 से अधिक है। इसलिये यह सार्थकता के स्तर 0.05 पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना **"शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं अभिवृत्ति में कोई सर्थक अंतर नहीं होगा।"** निरस्त की जाती है।

शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की अभिवृत्ति के माध्य फलांको के मान 49.46 हैं, जोकि शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के माध्य फलांकों का मान 47.37 से सार्थक रूप से ज्यादा है। अर्थात् निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की अभिवृत्ति के माध्य फलांको के मान, शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के माध्य फलांको के मान की तुलना में अधिक है। इसलिये कहा जा सकता है कि शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं अभिवृत्ति के माध्य फलांको के मान में सार्थक अंतर पाया गया।

निष्कर्ष

1. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि के माध्य फलांको के मान में सार्थक अंतर पाया गया।
2. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति के माध्य फलांको के मान में सार्थक अंतर पाया गया।
3. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं अभिवृत्ति के माध्य फलांको के मान में सार्थक अंतर पाया गया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- भटनागर, सुरेश (2005), वर्तमान भारतीय शिक्षा एवं समस्यायें, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।
- अस्थाना, वी0 एण्ड अस्थाना, श्वेता (2005), में सरमेन्ट एण्ड इवेल्यूएशन्स इन साइकोलॉजी एण्ड एजूकेशन, आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर।
- शर्मा आर0 ए0 (1995) शैक्षिक अनुसंधान के सिद्धान्त मेरठ इण्टरनेशनल पब्लिकेशन हाउस।
- तिवारी, राधिका (2021). विश्वविद्यालय और पूर्व विश्वविद्यालयीन व्याख्याताओं की शैक्षिक दक्षता, व्यक्ति और अभिवृत्ति के बीच सम्बन्ध के अध्ययन का प्रयास, पी.एच.डी. शोध, आगरा विश्वविद्यालय।
- भावना (2022). देवी पाटन के माध्यमिक विद्यालयो ं के शिक्षको ं की ऊर्जा शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारको ं एवं योग्यता व्यक्तित्व विशेषताओं के सम्बन्ध का अध्ययन, शोध प्रबन्ध (शिक्षाशास्त्र), डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद।
- दास, डी.एवं बोहरा (2022), ''टीचर इफेक्टीवनेस इन रिलेशन टू देयर इमोशनल इंटेलीजेन्स'', जर्नल ऑफ इण्डियन एज्यूकेशन, वोल्यूम–2, पृ.सं. 51–52.
- पाण्डेय, के (2023), ''एन इफेक्ट ऑफ एन्जाइटी ऑन डवलपमेंट ऑफ इमोशनल इंटेलीजेंस'', इण्डियन साइकोलॉजिकल रिव्यू, वॉल्यूम–62(1), पृ.सं. 25–30.

iajesm
Quality Of Work... Never Ended...